साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2554, फाल्गुन पूर्णिमा, 19 मार्च, 2011 वर्ष 40 अंक 8

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

येसञ्च सुसमारद्धा, निच्चं कायगता सति।
अकिच्चं ते न सेवन्ति, किच्चे सातच्चकारिनो।
सतानं सम्पजानानं, अत्थं गच्छन्ति आसवा॥

– धम्मपद २९३, पकिण्णकवग्गो

जिनकी कायानुस्मृति नित्य उपस्थित रहती है (यानी, जो सतत कायानुपश्यना करते रहते हैं, काय के प्रति एवं काय में होने वाली संवेदनाओं के प्रति जागरूक रहते हैं), वे (साधक) कभी कोई अकरणीय काम नहीं करते, सदा करणीय ही करते हैं। (ऐसे) स्मृतिमान और प्रज्ञावान (साधकों) के आश्रव क्षय को प्राप्त होते हैं (उनके चित्त के मैल नष्ट होते हैं)।

वास्तविक धर्म (३)

भगवान बुद्ध ने धर्म सिखाया यानी निसर्ग के सर्वव्यापी नियमों का उपदेश दिया। यदि धर्म है तो वह सर्वव्यापी, सार्वजनीन, सार्वकालिक और सार्वभौमिक ही होगा। अग्नि का धर्म जलना और जलाना है। अग्नि जब कभी, जहां कहीं भी उत्पन्न होगी, अपना धर्म ही प्रकट करेगी। वह स्वयं जलेगी और जो उसके संपर्क में आयेगा उसे जलायेगी। अग्नि का यह धर्म भूतकाल में भी था, वर्तमानकाल में भी है और भविष्यकाल में भी रहेगा। इसी प्रकार बर्फ का धर्म है शीतल होना और जो उसके संपर्क में आये उसे शीतल करना। बर्फ का यह धर्म भी सर्वव्यापी है, सार्वजनीन है, सार्वकालिक है, सार्वभौमिक है। इसी प्रकार मन में विकार जगना दुःखप्रद है और मन को विकार-विहीन कर लेना सुखप्रद है। यह भी प्रकृति का ही अटूट नियम है, जो सदा से चला आ रहा है और भविष्य में भी कायम रहेगा। प्रकृति के सार्वजनीन नियमों को ही धर्म या स्वभाव कहा गया। भगवान ने इसी अर्थ में धर्म सिखाया। अपने बिगड़े हुए मानस को सुधार कर दुःखमुक्त होने की विद्या सिखायी। यही बुद्ध की सही शिक्षा थी, यही धर्म था। प्रकृति के सत्यनियमों पर आधारित होने के कारण सत्यधर्म अर्थात सद्धर्म कहलाया। उन्होंने चित्त को जड़ों तक विकार-विहीन करने की जो विद्या सिखायी वह भी प्रकृति के नियमों पर आधारित होने कारण सार्वजनीन ही थी। शील का पालन करना, समाधि के लिए सार्वजनीन माध्यम यानी सहज स्वाभाविक आश्वास-प्रश्वास को तटस्थभाव से देखना और इसके आधार पर मन को एकाग्र करना सिखाया। आश्वास और प्रश्वास सभी जीवित प्राणियों की स्वभाविक प्रक्रिया है। चित्त एकाग्र होने पर सारे शरीर में जो सुखद-दुःखद अथवा असुखद-अःदुखद संवेदनाओं की जो अनुभूति होती रहती है, उन्हें बिना किसी प्रकार की प्रतिक्रिया किये हुए, तटस्थभाव से जानने की कल्याणी विपश्यना विद्या सिखायी। जैसे श्वांस सार्वजनीन है वैसे ही शरीर पर होने वाली संवेदनाएं भी सार्वजनीन हैं। उन्हें दुःखद मान कर द्वेष जगाना हर व्यक्ति के लिए दुःखद परिणाम ही लाता है और इनके प्रति तटस्थ रहना हर व्यक्ति के लिए सुखद परिणाम लाता है। प्रकृति का यह नियम भी सर्वव्यापी, सार्वजनीन, सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। मनुष्य मात्र पर लागू होता है। सामान्य व्यक्ति सदाचारी रहना चाहता है परंतु मन वश में न होने और निर्मल न होने से, न चाहते हुए भी दुराचार का कदम उठा लेता है।

भगवान बुद्ध ने दुखियारे जगत को दुःखमुक्त होने के लिए जो सिखाया वह किसी व्यक्तिविशेष के लिए नहीं, बल्कि सब के लिए था। अतः उन्होंने अपनी शिक्षा को धर्म अथवा सद्धर्म कहा। वैसे ही धर्म का पालन करने वाले के लिए धम्मिको यानी धार्मिक और धम्मट्ठो यानी धर्मस्थ जैसे शब्दों का ही प्रयोग किया।

भगवान ने कभी कोई संप्रदाय स्थापित नहीं किया। वे संप्रदाय के विरोधी थे। संप्रदाय समाज को अलग-अलग करता है, जबकि धर्म उन्हें जोड़ता है। धर्म सदा अभिन्न होता है और संप्रदाय भिन्न होते हैं। संप्रदायों का गठन कैसे होता है, इसे समझें।

कुछ लोग किसी एक प्रकार के कर्मकांड या व्रत-उपवास, तीज-त्यौहार, दार्शनिक मान्यता आदि मानते हैं। वे सार्वजनीन न होने के कारण अलग-अलग होती हैं और लोगों को सांप्रदायिक बाड़े में बांध देती हैं। वे संप्रदायवादी सदैव एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धी ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे से द्वेष, दुर्भावना रखने वाले होते हैं। हिंसा का उद्‌गम इन्हीं से होता है। ऐसे संप्रदायवादी लोग चाहते हैं कि हमारे बाड़ेबंदी में दूसरे लोग भले चले आयें, पर हमारी बाड़ेबंदी के लोग इसके बाहर न जा सकें।

दुर्भाग्य से इन संप्रदायों के लिए धर्म शब्द का प्रयोग करके मनुष्य जाति ने अपनी हानि कर ली। धर्म जो सार्वजनीन है, वह हिंदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख, मुस्लिम, यहूदी आदि कैसे होगा? उन्हें संप्रदाय कहते हुए झिझकते हों तो भले समाज कहें, समुदाय कहें, संगठन अथवा पंथ आदि शब्दों का प्रयोग करें। परंतु इनके कर्मकांड, दार्शनिक मान्यताएं, तीज-त्योहार, पर्व-उत्सव आदि अलग-अलग होते हैं, इस कारण ये संप्रदाय विभिन्न होते हैं। जबकि धर्म तो अभिन्न होता है। इन अलग-अलग संप्रदायों को धर्म

की संज्ञा दे देने के कारण जब इनका कोई अनुयायी इन कर्मकांडों दार्शनिक मान्यताएं, तीज-त्योहार, पर्व-उत्सव आदि का पालन करने लगता है तब बेचारा समझता है कि मैं बड़ा धार्मिक हो गया हूं, जबकि हो सकता है उसमें वस्तुतः धर्म का नामोनिशान ही न हो। जब से इन सांप्रदायिक संगठनों को धर्म कहा जाने लगा, यहां तक कि बुद्ध के अनुयायी भी भगवान की शिक्षा को धर्म या सद्धर्म न कह कर ''बौद्धधर्म'' कहने लगे और बुद्धानुयायी होने पर भी अपने आप को धार्मिक न कह कर, ''बौद्ध'' कहने लगे, तब से वास्तविक धर्म का अवमूल्यन हो गया।

भारत स्वतंत्र होने पर जब हमारा संविधान बना तब उसमें लिखा गया कि हमारी सरकार 'धर्मनिरपेक्ष' होगी। इसका शाब्दिक अर्थ होता है-- जहां धर्म की अपेक्षा ही न हो। यानी हमारी सरकार धर्म-हीन होगी? ऐसी धर्म-विहीन या धर्मविरोधी सरकार भला किस काम की? वह आदर्श सरकार कैसे हो सकती है?

सरकार का संविधान यह कदापि नहीं कहना चाहता था कि हमारा देश धर्मविरोधी होगा। उसे धर्म की अपेक्षा ही नहीं होगी। इससे कितनी बड़ी भ्रांति फैलेगी। हमारा संविधान यह कहना चाहता था कि हमारी सरकार संप्रदाय निरपेक्ष होगी, परंतु धर्म सापेक्ष होगी। संप्रदाय निरपेक्ष का अर्थ हुआ कि वह किसी संप्रदाय का पक्षपात नहीं करेगी। परंतु संप्रदाय निरपेक्ष कहने में संविधानविदों का कोई दोष नहीं। क्योंकि धर्म शब्द संप्रदायों के साथ इस प्रकार जुड़ गया कि लोग संप्रदायों को ही धर्म मानने लगे। संविधानविदों के सम्मुख जब यह तथ्य प्रकट हुआ तब उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ और उसे सुधार कर पंथ-निरपेक्ष कहा गया, जो कि सर्वथा उचित ही है। यहां यह दुख का विषय है कि इस उचित सुधार होने के बावजूद भी देश के अनेक राजनेता और समाजनेता धर्मनिरपेक्ष जैसे अनुचित शब्द का उपयोग करते हैं।

भविष्य में फिर ऐसी भूलें न हों। भगवान बुद्ध की इस सार्वजनीन शिक्षा को तथा इस सत्य को लोग भली प्रकार समझें कि बुद्ध ने बौद्धधर्म नहीं सिखाया, बल्कि धर्म सिखाया। लोगों को बौद्ध नहीं बनाया, बल्कि धार्मिक बनाया। उनकी यह सार्वजनीन शिक्षा पुनः जाग्रत हो। लोग सांप्रदायिक बाड़ेबंदी से मुक्त होकर विपश्यना के अभ्यास द्वारा परस्पर वैमस्यता के स्थान पर सौमनस्यता जगायें। दुर्भावना के स्थान पर सद्भावना जगायें। इसी में अपने देश का ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति का सच्चा कल्याण समाया हुआ है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का.

श्रीलंका के पुनर्वास शिविरों में विपश्यना

श्रीलंका में लिट्टे संघर्षविराम के बाद बेघर हुए बंदियों और उनके परिवार को अनेक शरणार्थी शिविरों में रखा गया है। सरकार उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएं देने का प्रयत्न कर रही है। कुछ विपश्यी कार्यकर्ताओं और भदंत रतनपालजी (विपश्यनाचार्य) के सत्प्रयत्न से ऐसे विस्थापितों के कल्याण के लिए, उन्हीं परिसरों में समुचित व्यवस्था करके विपश्यना शिविर लगाने की योजना में सरकार ने सहयोग दिया जो कि अब बहुत कल्याणकारिणी सिद्ध हो रही है। इससे बंदियों के जीवन में छाई हताशा और निराशा दूर हो रही है और उनके मुरझाये हुए चेहरों पर रौनक लौटने लगी है। उनमें नये सिरे से जीवन जीने की प्रेरणा जाग्रत हुई है। उनमें आये परिवर्तनों को देख कर अन्य सभी रिहैबिलिटेशन सेंटरों में विपश्यना शिविर लगाने का अभियान-सा आरंभ हो गया है।

ऐसे ही शिविरों में सम्मिलित कुछ साधकों के उद्‌गार यहां उद्धृत हैं--

नं. १८. जब मैं रिहैबिलिटेशन में था तभी मुझे मेरे भाई के मरने का समाचार मिला। कुछ समय पश्चात मां के निधन का भी समाचार मिला। पिताजी भी हृदयरोग से पीड़ित हैं। मेरा जन्म दक्षिण लंका में हुआ था परंतु पता नहीं कब और कैसे उत्तरी लंका में आ गये।

मुझे नहीं पता था कि मेरे जीवन में ऐसे दुःखभरे क्षण क्यों आ रहे हैं? ऐसे में मेरी रुचि आध्यात्मिकता की ओर हुई। मैं धार्मिक पुस्तकें पढ़ने लगा परंतु उससे मुझे संतोष नहीं मिला। मैंने छह महीने के एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लिया। उसी समय मुझे विपश्यना के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। परंतु मैं इसके प्रथम शिविर में भाग नहीं ले सका। मुझे श्री गोयन्काजी के यहां से प्रकाशित विलियम हार्ट की पुस्तक 'दि आर्ट ऑफ लिविंग' पढ़ने के लिए मिली, तब मुझे लगा कि भगवान बुद्ध ने मुझ पर बहुत बड़ी कृपा कर दी। मैं नित्य प्रति प्रार्थना करने लगा कि मुझे इस दुःखमय जीवन से किसी प्रकार मुक्ति मिले और अधेड़ उम्र के बचे हुए शेष जीवन का सदुपयोग कर सकूं। विपश्यना में सम्मिलित होने के बाद अब मैं अपने उज्ज्वल भविष्य को स्पष्टरूप से देख सकता हूं। बीते हुए समय की चिंता नहीं रही और न ही भविष्य के प्रति उद्वेलित हूं। अब मैं सचमुच वर्तमान में जीने लगा हूं। धर्म मेरी रक्षा करेगा और विपश्यना का अभ्यास सुख तथा शांति प्रदान करेगा। मैं धर्म की सेवा में लगना चाहता हूं। मैं श्री गोयन्काजी का हृदय से आभार मानता हूं जो पिछले २००० वर्षों से अपने शुद्ध रूप में सुरक्षित भगवान बुद्ध की इस अनमोल विद्या को म्यंमा से वापस लाये।

नं. २४. इस युद्ध में मैं अपने माता-पिता तथा सभी भाइयों को खो चुका हूं। मैं बहुत दुःखी था और विपश्यना के इस शिविर (प्रोग्राम) में भाग नहीं लेना चाहता था।

ऐसे समय पर विपश्यना के आचार्य ने जब ध्यान के गुणों के बारे में बताया तब एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि चलो करके देखते हैं। लेकिन फिर जब शिविर की अनुशासन संहिता और नियमों के बारे में सुना तो भयभीत हुआ कि ये सब मुझसे कैसे संभव होगा? कुछ भी हो, मुझे मन की शांति तो चाहिए ही। अतः मन को मजबूत किया और शिविर में सम्मिलित हुआ। आचार्य के निर्देशानुसार काम आरंभ किया परंतु सांस का आना-जाना बिल्कुल समझ में ही नहीं आ रहा था। मैंने शिविर छोड़ने का निर्णय किया परंतु यह नियम पहले ही बता दिया गया था कि शिविर में सम्मिलित होने के बाद कोई उसे छोड़ नहीं सकता। अतः मन को फिर से मजबूत करके, दृढ़प्रतिज्ञ हुआ कि चाहे जो हो, शिविर में मन लगाना है और सफलता प्राप्त करनी है।

फिर धीरे-धीरे विधि समझ में आने लगी और जैसे-जैसे काम करता गया, सांस और संवेदना सभी कुछ अनुभव पर उतरने लगे। शरीर में अनेक प्रकार की संवेनाओं का अनुभव होने लगा और आचार्य के निर्देशानुसार काम करते चला गया। इन दस दिनों में बहुत लाभ हुआ। मन शांत हो गया और इसके विकार कम होने लगे। गुस्सा, घृणा, भय आदि विकार निकलने लगे। अब मन में किसी के प्रति कोई बैरभाव नहीं है। अब तो यही भाव जागते हैं कि जो लोग मेरी तरह इन दुःखों में जकड़े हुए हैं, उन्हें भी यह विद्या शीघ्र मिले और सब का मंगल हो। अरे, विश्व के सभी लोग इस धर्मपथ पर चल कर सुखी हों। यह विद्या श्रीलंका के सभी लोगों को, उनके सांप्रदायिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रख कर, अवश्य सिखायी जानी चाहिए।

मुझे विश्वास है ऐसे शिविर में सम्मिलित होने का अवसर पुनः प्राप्त होगा। मैं सभी सरकारी अधिकारियों, विपश्यनाचार्यों और धर्मसेवकों का हृदय से आभारी हूं।

पगोडा पर सवैतनिक धर्मसेवा का सुअवसर

विश्व विपश्यना पगोडा की देखभाल तथा वर्तमान योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित कार्यकुशल **अनुभवी इंजीनियरों, प्राजेक्ट मैनेजर, मेकैनिकल, इलेक्ट्रिकल, प्लंबिंग, हाऊस-कीपिंग मैनेजर्स, जूनियर एवं सीनियर आर्कीटेक्ट्स, तथा Liaison & PR Officer, फिटर्स** एवं **टूरिस्ट गाइड्स** आदि की आवश्यकता है। ८-१० वर्ष के **परिपक्व अनुभवी** तथा अवकाशप्राप्त सरकारी अधिकारियों को प्राथमिकता दी जायगी। आकर्षक **वेतन** तथा अन्य सुविधाओं के साथ **धर्मभूमि पर धर्मसेवा** का सुनहरा अवसर। अधिक जानकारी एवं नियुक्ति के लिए कृपया अपने बारे में विवरण सहित यथाशीघ्र **संपर्क** करें--
जनरल मैनेजर, **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन,** गोराई खाडी, बोरीवली (प.), मुंबई- 400091. फोन- 022-33747501.
Email: globalpagoda@hotmail.com;
Website: www.globalpagoda.org;

धम्म पत्तन विपश्यना केंद्र, गोराई (मुंबई)

Booking for Vipassana courses: **Dhamma Pattana Vipassana Centre,** Gorai, Borivali (W), Mumbai–400091.
Mob.: 09773069975, Tel.: (022) 28452238 Fax.: 022-33747531;
Online application-- Email: registration_pattana@dhamma.net.in;
For other information: Email: info@pattana.dhamma.org

सहायक आचार्य कार्यशालाएं

मध्य क्षेत्र के सभी सहायक आचार्यों से निवेदन है कि १५ से १८ अगस्त तक होने वाली धम्म गिरि, इगतपुरी की सहायक आचार्य कार्यशाला में भाग लेकर इसका लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि यह कार्यशाला १५ की प्रातःकाल आरंभ हो जायगी। अतः सभी अभ्यार्थी १४ की रात तक धम्मगिरि पहुँच जायँ। बुकिंग आदि के लिए **संपर्क**-- व्यवस्थापक, **धम्मगिरि, इगतपुरी**. ....

इसी प्रकार जयपुर में सहायक आचार्य कार्यशाला २ से ६ दिसंबर तक होगी। कार्यशाला २ की सायं आरंभ होगी।
संपर्क-- धम्म थली, विपश्यना केंद्र, जयपुर ...

बुद्धपूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर

१७ मई, २०११, मंगलवार, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में **एक दिवसीय** शिविर का आप भी लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये** न आएं। **बुकिंग संपर्क: मो. 0 98928 55692, 0 98928 55945,**
फोन नं.: 022- 28451170, 33747543, 33747544,
(फोन बुकिंग समय : प्रातः **११** से सायं **५** तक, प्रतिदिन)
ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org;
Online Registration: www.vridhamma.org

आवश्यकता है

धम्म बल, जबलपुर विपश्यना केंद्र

केंद्र की संपूर्ण देखभाल के लिए लगभग ५० वर्षीय पूर्णकालिक मैनेजर की आवश्यकता है। उचित मानदेय भी दिया जायगा। कृपया योग्य व्यक्ति अपने बारे में विवरण के साथ यथाशीघ्र आवेदन करें। संपर्क-- जबलपुर केंद्र संपर्क। श्री बाठीजा-- ०९९८१५९८३५२.

धम्म पुष्कर, अजमेर (राजस्थान)

ऐसे ही अजमेर के विपश्यना केंद्र के लिए पूर्णकालिक सहायक मैनेजर-- मैनेजर की आवश्यकता है। योग्य व्यक्ति धम्म पुष्कर केंद्र के पते पर संपर्क करें। श्री तोषणीवाल, फोन – 098290-71778. Email ID info@toshcon.com & Shri Anil Dhariwal ji (M) 098290-28275.

विपश्यना केंद्रों की प्रगति-सूचना

धम्म बल, जबलपुर (म.प्र.)

धम्मबल, जबलपुर विपश्यना केंद्र पर २००५ से लगातार शिविर आयोजित हो रहे हैं। साधकों की संख्या बढ़ने के कारण और निवासों का निर्माण आवश्यक हो गया। फिलहाल महिलाओं के लिए १६ कमरों का निर्माणकार्य आरंभ हो चुका है। इस धर्मकार्य में पुण्यार्जन के इच्छुक साधक-साधिकाएं केंद्र व्यवस्थापकों से संपर्क करें। **ऐक्सिस बैंक** का अकाउंट क्र. 128010100-103602, **विपस्सना ट्रस्ट जबलपुर** है। श्री महेश बाठीजा-- 099815-98352.

धम्म पुब्बोत्तर, मिजोरम (उ.पूर्वी भारत)

इस क्षेत्र में पहला जिप्सी शिविर जनवरी २००७ में लगा। तभी से साधकों ने मिलकर विपश्यना वहां केंद्र स्थापना के बारे में सोचने लगे। २००९ में किसी साधक ने ७ हेक्टेयर जमीन का दान देकर केंद्र-निर्माण का काम आसान कर दिया। सभी साधकों ने मिल कर लगभग १०० लोगों के शिविर के लिए हॉल आदि सभी आवश्यक निर्माण करने में लग गये और अक्टूबर २०१० में यहां पहला शिविर लगा। गत वर्ष यहां कुल ८ शिविर लगे और वर्ष २०११ के लिए भी ८ शिविरों की योजना बनी है। अधिक से अधिक लोग इस ठंडे प्रदेश में तपने का लाभ उठा सकें, तदर्थ पुण्यार्जन के इच्छुक साधक-साधिकाएं **धम्म पुब्बोत्तर विपश्यना केंद्र, कमलानगर, मिजोरम** के पते पर संपर्क कर सकते हैं।

श्रीलंका के तीसरे विपश्यना केंद्र पर शिविर आरंभ

धम्म अनुराध, अनुराधपुर के विपश्यना केंद्र का उद्घाटन ८५ भिक्षुओं के संघदान से हुआ जो कि १६ दिसंबर को था और उसी शाम ४७ भिक्षुओं का पहला शिविर आरंभ हुआ। यहां के दूसरे शिविर में ११ पुरुष, ३३ महिलाएं, २ भिक्षु और ४ साध्वियां सम्मिलित हुईं। अब हर महीने एक शिविर का आयोजन होता रहेगा। यह जमीन २००८ में खरीदी गयी थी

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

और अक्टूबर २००९ को नींव दी गयी और तीन वर्ष के अंदर नियमित शिविर लगने आरंभ हो गये। इसके पूर्व **धम्म कूट** और **धम्म सोभा** केंद्रों पर शिविरों का आयोजन पहले से ही हो रहा है। **संपर्क**-- D.H. Henry, Opp. School, Wannithammannawa, Anuradhapura, Sri Lanka. Tel.: 0094-252221887, Mo: 0094-714182094.

ग्लोबल विश्व पगोडा पर हजारों अतिथि

ग्लोबल विश्व पगोडा (मुंबई) पर प्रतिदिन आने वाले हजारों अतिथियों को यदि आप गाइड की सेवा देना चाहते हैं तो कृपया हमें इस इमेल पर लिखें : **guides@globalpagoda.org**; या फोन करें- 022-33747501 या 33747503.

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री राजरत्न धाख्वा, *नेपाल.* नेपाल में वि. प्रशिक्षण सामग्री उत्पादन एवं संरक्षण की सेवा

वरिष्ठ सहाय आचार्य

१-२. श्री ऋषिकांत एवं श्रीमती मीनाक्षी मेहता, *अहमदाबाद.*
३. श्री पुरुषोत्तमदास पटेल, *अहमदाबाद*
४. श्री उपेंद्रकुमार पटेल, *मेहसाणा*
५-६. श्री दिनेश एवं श्रीमती शोभना शाह, *अहमदाबाद*
7. & 8. Dr. Maung Maung Aye & Daw Yi Yi Win, *Myanmar*
9. Daw Yin Hla, *Myanmar*
10. U Thein Htwe, *Myanmar*
11. & 12. U San Lwin & Daw Tin Tin Naing, *Myanmar*
13. Daw Aye Myint, *Myanmar*
14. Daw Hla Myint, *Myanmar*
15. Daw Hla Hla Myint, *Myanmar*
16. Dr. U Thein Tun, *Myanmar*
17. Daw Nyo Nyo Win, *Myanmar*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री रघुवीरसिंह मान, नांदेड
२. श्री सुशील मानसिंहका, औरंगाबाद
३. श्री रवि सक्सेना, मुंबई
४. श्रीमती सीमा शर्मा, नई दिल्ली
5. Ms. Alicia Vispo, *Spain*

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती रतनमाला गौतम भावे, नांदेड

दोहे धर्म के

सदा शील में रत रहे, राखे चित्त अडोल।
प्रज्ञा में पकता रहे, यही धर्म अनमोल॥

धर्म नियम है नियति का, धर्म अनंत असीम।
गन्ना मीठा ही लगे, खारा सब को नीम॥

भाषा बोली भिन्न है, सार तत्त्व तो एक।
धर्म विश्व का एक है, दर्शन हुए अनेक॥

धर्म न मिथ्या रूढियां, धर्म न मिथ्याचार।
धर्म न मिथ्या मान्यता, धर्म सत्य का सार॥

शुद्ध धर्म तो एक है, छिलके हुए अनेक।
छिलके तो निस्सार हैं, सार धर्म का देख॥

सम्यक दर्शन धर्म है, यही मुक्ति का स्वाद।
धर्म न थोथी कल्पना, धर्म न थोथा वाद॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सैं पर ही लागू हुवै, कुदरत रो कानून।
मन बिगड्यां ब्याकुल हुवै, पड़ै घाव पर लूण॥

करै बात तो धरम री, मन स्यूं छुटै न पाप।
बीं मूरख का ना मिटै, दुक्ख और संताप॥

दुस्करमां दुख चक्र स्यूं, कोई हुयो न पार।
जो सुख चावै मानखा, अपणो करम सुधार॥

पक्छपात होवै नहीं, हुवै न तनिक लिहाज।
रित तोड्यां दंडित हुवै, यो कुदरत रो राज॥

मैलो मन चंचल रवै, ब्यथा रवै भरपूर।
मन निरमळ हो ज्याय तो, हुवै दुखां स्यूं दूर॥

दुस्करमां नै त्याग दे, कर सतकरम सुजान।
दुस्करमां दुख नीपजै, सतकरमां कल्याण॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2554, **फाल्गुन पूर्णिमा,** **19 मार्च, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org